'द सीक्रेट लाइफ ऑफ प्लांट्स ने बदल दिया नजरिया'

साहित्य अकादमी ने आयोजित की व्यक्ति एवं कृति परिचर्चा

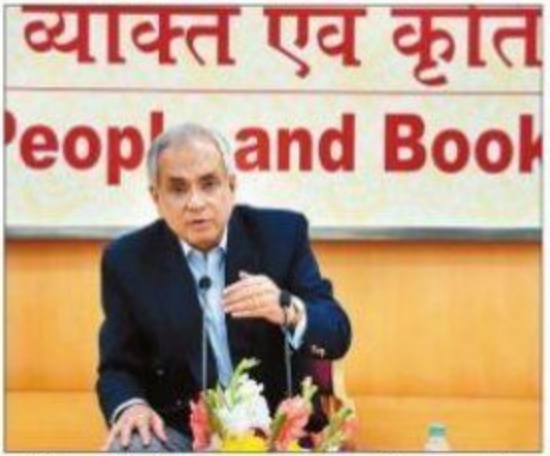

नीति आयोग के वाइस चेयरमैन रविंद्र भवन में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए।

नई दिल्ली, 19 नवम्बर (नवोदय टाइम्स): जीवन में मैंने पहली बार बाराखंभा रोड स्थित मॉर्डन स्कूल में व्यवस्थित लाइब्रेरी देखी और उसका भरपूर लाभ भी उठाया।

जिसके बाद शरतचंद्र, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय एवं प्रेमचंद के साहित्य से मेरा परिचय हुआ। इसी दौरान मुझे मेरे शिक्षक ने लोकमान्य तिलक की पुस्तक 'गीता रहस्य' दी जिसको पढ़कर मैंने कर्तव्य और विराटता के अर्थों को व्यापक रूप से समझा। यह बात साहित्य अकादमी में मंगलवार को आयोजित हुए कार्यक्रम 'व्यक्ति एवं कृति' में अर्थशास्त्री एवं नीति आयोग के उपाध्यक्ष डॉ. राजीव कुमार ने कही। यहां उन्होंने अपने जीवन के विभिन्न चरणों में प्रभावित करने वाली अनेक पुस्तकों की चर्चा की। अपने बचपन को याद करते हुए उन्होंने बताया कि उस समय उनकी पहली पहचान गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशित 'बाल रामचरित मानस' तथा 'आदर्श बालक' शृंखला की पुस्तकों से हुई। इसी के द्वारा उन्होंने भरत और एकलव्य जैसे चरित्रों द्वारा निर्भीकता और गुरु के प्रति आदर और असमानता का विरोध करने जैसे गुणों को प्राप्त किया।

मॉडर्न स्कूल के अलावा सेंट स्टीफन कॉलेज में पढ़ाई के दौरान उन्होंने 'द कम्यूनिस्ट मैनिफेस्टो' एवं 'इजरायल सिक्स डे वॉर' के साथ ही उर्दू शायरी के मशहूर नामों साहिर लुधियानवी, शकील बदायूंनी, मजाज लखनवी और खुमार बाराबंकी के साथ ही श्रीलाल शुक्ल की 'राग दरबारी' को पढ़ा।

अपनी विदेश में पढ़ाई की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मैं वहां एक कट्टर मार्क्सवादी बनकर गया था, लेकिन वहां पढ़ी एक किताब 'द सीक्रेट लाइफ ऑफ प्लांटस' ने उनका पूरा नजरिया ही बदल दिया और वे वहां से एक राष्ट्रवादी बनकर आए। आगे उन्होंने कहा कि हमारे अपने अच्छे या बुरे निर्णयों के द्वारा ही हमारा व्यक्तित्व बनता है इसके लिए किसी को दोष देना निरर्थक है।

हमने अपने पारंपरिक ज्ञान की विरासत को महत्त्व नहीं दिया: राजीव

नई दिल्ली, लोकसत्य

- **नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार ने प्रिय पुस्तकों के बारे में की बातचीत**

साहित्य अकादमी ने अपने प्रतिष्ठित कार्यक्रम 'व्यक्ति एवं कृति' के अंतर्गत प्रख्यात अर्थशास्त्री एवं नीति आयोग के उपाध्यक्ष डा. राजीव कुमार को आमंत्रित किया था। राजीव कुमार ने अपने जीवन के विभिन्न चरणों में प्रभावित करने वाली अनेक पुस्तकों की चर्चा की। अपने बचपन को याद करते हुए उन्होंने बताया कि उस समय उनकी पहली पहचान गीता प्रेस, गोरखपुर प्रकाशित 'बाल रामचरित मानस' तथा 'आदर्श बालक' श्रृंखला की पुस्तकों से हुई। इसी के द्वारा उन्होंने भरत और एकलव्य जैसे चरित्रों द्वारा निर्भीकता और गुरु के प्रति आदर और असमानता का विरोध करने जैसे गुणों को प्राप्त किया।

माडर्न स्कूल बाराखंभा में अपनी पढ़ाई का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि जीवन में उन्होंने पहली बार व्यवस्थित लाइब्रेरी देखी और उसका भरपूर लाभ उठाया। बाद में शरतचंद्र, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय एवं प्रेमचंद के साहित्य से अपने परिचय के बारे में भी बताया। इसी दौरान अपने शिक्षक द्वारा दी गई लोकमान्य तिलक की पुस्तक 'गीता रहस्य' को पढ़कर भी उन्होंने कर्त्तव्य और विराटता के अर्थों को व्यापक रूप से समझा। इसी समय वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में रामकृष्ण मिशन द्वारा दी गई विवेकानंद की पुस्तकों ने उनके जीवन में बहुत कुछ जोड़ा। सेंट स्टीफन कालेज में पढ़ाई के दौरान उन्होंने 'द कम्यूनिस्ट मैनिफेस्टो' एवं 'इजरायल सिक्स डे वॉर' के साथ ही उर्दू शायरी के मशहूर नामों साहिर लुधियानवी, शकील बदायूँनी, मजाज़ लखनवी और ख़ुमार बाराबंकी के साथ ही श्रीलाल शुक्ल की 'राग दरबारी' को पढ़ा।

'द सीक्रेट लाइफ ऑफ प्लांट्स' ने बदला नजरिया : राजीव कुमार

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

नई दिल्ली।

साहित्य अकादमी द्वारा मंगलवार को 'व्यक्ति एवं कृति' का आयोजन किया गया। इसमें प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं नीति आयोग के उपाध्यक्ष एवं डॉ. राजीव कुमार ने अपने जीवन के विभिन्न चरणों में प्रभावित करने वाली अनेक पुस्तकों की चर्चा की।

साहित्य अकादमी द्वारा 'व्यक्ति एवं कृति' का आयोजन

साहित्य अकादमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने राजीव कुमार को अंगवस्त्र और पुस्तकें भेंट की। उन्होंने कहा कि पिछले 30 सालों से चले आ रहे इस कार्यक्रम श्रृंखला में हम साहित्यकारों से इतर ऐसे प्रमुख लोगों को बुलाते हैं, जिन्होंने अपने जीवन में विशेष सफलताएं प्राप्त की हों। अभी तक इस श्रृंखला में जयंत नार्लीकर, मृणालिनी साराभाई, सलिल चौधरी, मधु दण्डवते, अटल बिहारी वाजपेयी, दिलीप पंडगांवकर, सीताराम येचुरी आदि कई महत्वपूर्ण हस्तियां शिरकत कर चुकी हैं। विदेश में पढ़ाई की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मैं वहां एक कट्टर मार्क्सवादी बनकर गया था, लेकिन वहां पढ़ी एक किताब 'द सीक्रेट लाइफ ऑफ प्लांटस' ने उनका पूरा नजरिया ही बदल दिया और वे वहां से एक राष्ट्रवादी बनकर आए। हमारे अपने अच्छे या बुरे निर्णयों द्वारा ही हमारा व्यक्तित्व बनता है, जिसके लिए किसी को दोष देना निरर्थक है।

साहित्य अकादेमी ने किया व्यक्ति एवं कृति का आयोजन

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

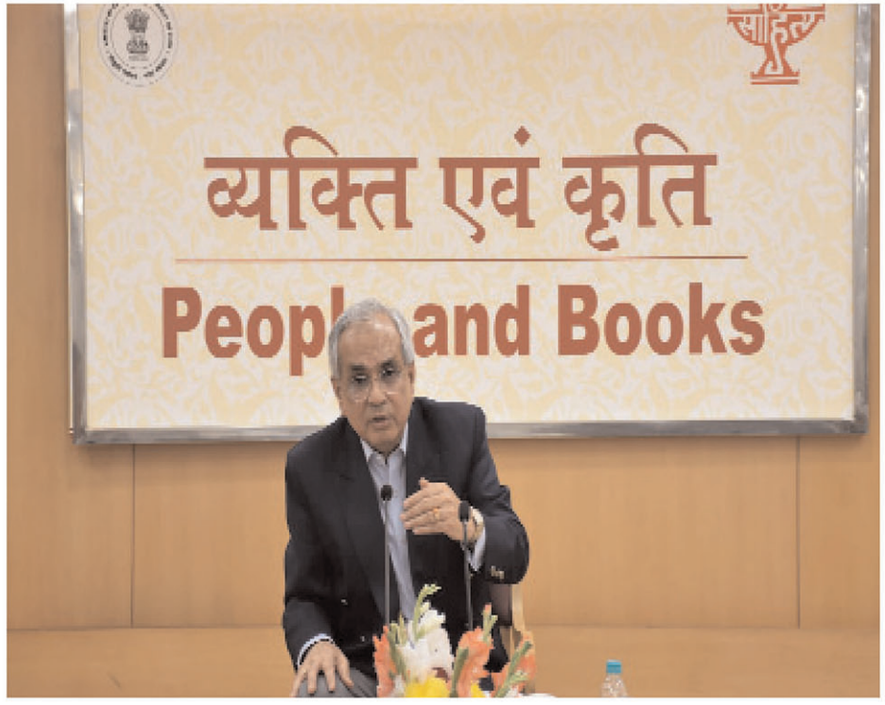

राजधानी दिल्ली में साहित्य अकादेमी ने व्यक्ति एवं कृति का आयोजन का आयोजन किया। अपने प्रतिष्ठित कार्यक्रम 'व्यक्ति एवं कृति' के अंतर्गत प्रख्यात अर्थशास्त्री और नीति आयोग के उपाध्यक्ष डॉ. राजीव कुमार को आमंत्रित किया था। इस दौरान राजीव कुमार ने अपने जीवन के विभिन्न चरणों में प्रभावित करने वाली अनेक पुस्तकों की चर्चा की। अपने बचपन को याद करते हुए उन्होंने बताया कि उस समय उनकी पहली पहचान गीता प्रेस, गोरखपुर प्रकाशित 'बाल रामचरित मानस' तथा 'आदर्श बालक' शृंखला की पुस्तकों से हुई। इसी के द्वारा उन्होंने भरत और एकलव्य जैसे चरित्रों द्वारा निर्भीकता और गुरू के प्रति आदर और असमानता का विरोध करने जैसे गुणों को प्राप्त किया। मॉडर्न स्कूल बाराखंभा में अपनी पढ़ाई का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि जीवन में उन्होंने पहली बार व्यवस्थित लाइब्रेरी देखी और उसका भरपूर लाभ उठाया। बाद में शरत्चंद्र, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय व प्रेमचंद के साहित्य से अपने परिचय के बारे में भी बताया। इसी दौरान अपने शिक्षक द्वारा दी गई लोकमान्य तिलक की पुस्तक 'गीता रहस्य' को पढ़कर भी उन्होंने कर्त्तव्य और विराटता के अर्थों को व्यापक रूप से समझा।

इसी समय वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में रामकृष्ण मिशन द्वारा दी गई विवेकानंद की पुस्तकों ने उनके जीवन में बहुत कुछ जोड़ा। सेंट स्टीफन कॉलेज में पढ़ाई के दौरान उन्होंने 'द कम्यूनिस्ट मैनिफेस्टो' एवं 'इजरायल सिक्स डे वॉर' के साथ ही उर्दू शायरी के मशहूर नामों साहिर लुधियानवी, शकील बदायूंनी, मजाज लखनवी और खुमार बारावकी के साथ ही श्रीलाल शुक्ल की 'राग दरबारी' को पढ़ा। अपनी विदेश में पढ़ाई की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मैं वहां एक कट्टर मार्क्सवादी बनकर गया था लेकिन वहाँ पढ़ी एक किताब 'द सीक्रेट लाइफ ऑफ प्लांटस' ने उनका पूरा नजरिया ही बदल दिया और वे वहां से एक राष्ट्रवादी बनकर आए। आगे उन्होंने कहा कि हमारे अपने अच्छे या बुरे निर्णयों के द्वारा ही हमारा व्यक्तित्व बनता है इसके लिए किसी को दोष देना निरर्थक है।

अर्थशास्त्र से जुड़ी महत्तवपूर्ण पुस्तक के रूप में उन्होंने पटियाला के प्रो. एच के मनमोहन सिंह की पुस्तक 'थ्योरी ऑफ यूटीलिटी' का जिक्र किया, जिसके द्वारा उन्हें ये समझ आया कि सभी पारंपरिक समाजों ने अपनी जरूरतों को हमेशा सीमित रखा तभी पृथ्वी इतने लंबे समय तक जीवित रही।